हिम संवाद

जनवरी 2022,संस्करण

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

www.de-layer.blogpost.in

नई शिक्षा नीति २०२० में देश के विचारों का,यहां की मिट्टी का, यहां की परंपराओं, संस्कृति और अस्तित्व का प्रावधान है: राज्यपाल

कार्यक्रम में सम्मिलित हुए हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल महामहिम अर्लेकर जी तथा ही.प्र.वि.वि के माननीय कुलपति श्री सत प्रकाश बंसल सहित सभी अतिथिगण

अभ्युदय तिवारी
धर्मशाला
13 अक्टूबर,2021

धर्मशाला स्थित हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा नई शिक्षा नीति २०२० के संदर्भ में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर जी रहे। संगोष्ठी का शीर्षक 'शिक्षा का भारतीय स्वरूप' था।मुख्य अतिथि अर्लेकर जी ने हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के आगामी सत्र से नई शिक्षा नीति लागू करने का लोकार्पण किया।

एवम हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय परिवार के नए संशोधित लोगो का भी विमोचन किया। अर्लेकर ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगो को नई शिक्षा नीति २०२० के बारे में जानकारी दी, उन्होंने कहा "नई शिक्षा नीति २०२० में, इस देश के विचारों का, यहां की मिट्टी के विचारों का, यहां की परंपरा, संस्कृति एवम अस्तित्व का प्रावधान है। नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा का भी उतना ही महत्व है जितना अंग्रेजी का होता है।" इसके साथ ही उन्होंने केंद्रीय विश्वविद्यालय परिवार का मार्गदर्शन किया और विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख विचारक, चिंतक एवम प्रचारक श्री इंद्रेश कुमार जी कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थे उन्होंने संबोधित करते हुए बताया कि भारत एक ऐसा अनोखा देश है जहां कभी घरों में ताला नहीं लगता था परंतु अंग्रेजों एवम अन्य शासकों द्वारा हमारी भाषा और हमारी संस्कृति के हनन की वजह से आज इस देश में सिर्फ घरों पर ही नहीं, रिश्तों पर भी ताले लग रहें हैं। उन्होंने अंत में कहा कहा कि, 'पूरा विश्व एक शब्द का अनुवाद है और वो शब्द है 'विद्यार्थी'। और इस शिक्षा निति से हर विद्यार्थी को अपने हुनर को पहचानने का मौका मिलेगा |

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सत्य प्रकाश बंसल जी ने अपने स्वागत भाषण में, देश के शिक्षा स्तर में आई रिक्तता को लेकर चिंतन करते हुए कहा कि," नई शिक्षा नीति २०२० को लागू होने से भारत की शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता में सुधार होगा।और इस नई शिक्षा नीति में भारत को अपना शोध, अपनी शिक्षा और अपनी एक नई पहचान देने की कोशिश की गई हैं।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को मिला एक नया संशोधित लोगो।

नया संशोधित लोगो

अभ्युदय तिवारी
धर्मशाला
21 अक्टूबर 2021:

हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल द्वारा धर्मशाला स्थित हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के नए संशोधित लोगो का विमोचन किया गया। महामहिम राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने केंद्रीय विश्वविद्यालय परिवार को नए लोगो के लिए शुभकामनाएं भेंट की एवं विश्वविद्यालय परिवार का मार्गदर्शन किया और उज्जवल भविष्य के लिए कामना की। नए संशोधित लोगो में डूबते सूरज की जगह पर उगते सूरज को जगह दी गई है। उगते सूरज का संबंध इस विषय से है की विद्यार्थी उगते सूरज की तरह जीवन में नया सवेरा लाएं और सवेरे की तरह ही विद्यार्थी भी एक नए जोश, विश्वास और आत्मविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ें। मुश्किलों से कभी न हारकर परंतु सीख लेकर अपना होंसला बुलंद करें क्योंकि सूरज डूबने के उपरांत ही नया सवेरा आता है।

नशीले पदार्थों के सेवन से हमारे राष्ट्र के समक्ष खतरे और इन खतरों के उन्मूलन में छात्रों की भूमिका।

अविजीत, विकास
धर्मशाला
गुरुवार-28 अक्टूबर 2021:

धर्मशाला हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के देहरा परिसर में नशीले पदार्थों के सेवन से हमारे राष्ट्र के समक्ष खतरे और इन खतरों के उन्मूलन में छात्रों की भूमिका" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर-एक तथा शाहपुर परिसर में आयोजित इस व्याख्यान में बतौर वक्ता हिमाचल प्रदेश नशा निवारण बोर्ड शिमला के संयोजक सह-सलाहकार ओम प्रकाश शर्मा ने शिरकत की।

इस मौके पर मुख्य वक्ता ओम प्रकाश शर्मा ने व्याख्यान के दौरान मौजूद छात्रों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस चुनौती से निपटने के लिए युवाओं को आगे आने की आवश्यकता है। आज का युवा बेरोजगारी और सुविधाओं को लेकर काफी दबाव में है। इसके साथ ही पश्चिमी देशों की तरह ही रहन सहन,वेशभूषा और नशा जैसे की शराब का

कार्यक्रम में सम्मिलित सभी अतिथिगणों को सीयूएचपी परिवार सम्मानित करते हुए।

सेवन और जल्द से जल्द पैसे कमाने की होड़ में जीवन की राह से भटक कर आज के युवा नशे के दलदल में फंसते जा रहे हैं।

आंकड़ों की मानें तो आज भारत में दस साल की आयु से लेकर 75 वर्ष तक की आयु के लगभग 14.212 करोड़ लोग नशे की चपेट में आ चुके हैं।मुख्य वक्ता ने एक सर्वे के आधार पर बताते हुए कहा कि आज भारत में 40 मीट्रिक टन हेरोइन का सेवन हर साल हो रहा है।आज हिमाचल प्रदेश में भी हालात बद से बदतर होते जा रहें हैं। अधिकतर जिलों में जिसमें ऊना, कुल्लू, कांगड़ा, सिरमौर,शिमला हमीरपुर, बिलासपुर आदि शामिल हैं जहाँ के मामलों में नाबालिगों की संख्या सर्वाधिक है।

मुख्य वक्ता ने समझाते हुए कहा कि भारत आज विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है और भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए देश के युवाओं को ही आगे आकर नशे को रोकना होगा और इस चपेट में आए अन्य युवाओं को भी रोकने का दायित्व लेना होगा।नशे से बचने के लिए युवाओं को अपनी इच्छा शक्ति को और मज़बूत बनाना होगा। जीवन में सकारात्मकता लानी होगी । युवा जब तक इस नशे की रोकथाम के लिए आगे नहीं आयेंगे इस अभियान को सफल नहीं बनाया जा सकता है। इस मौके पर सह-संयोजक डॉ आशीष नाग सहित काफी संख्या में छात्र छात्राएं और विवि का स्टाफ मौजूद रहे।

प्रिंट व्यवसाय की वर्तमान स्तिथि पर आमंत्रित व्याख्यान

मोहिनी
धर्मशाला

केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू के जनसंचार एवं नव मीडिया विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अर्चना ने वर्चुअल मध्यम से छात्रों को प्रिंट व्यवसाय एवम उसकी वर्तमान स्तिथि से रूबरू कराया। प्रिंट व्यवसाय पर चर्चा के दौरान उन्होंने बताया की,"पश्चिम में प्रसार और विज्ञापन राजस्व में भारी गिरावट देखी जा सकती है। ऑनलाइन विज्ञापन प्रिंट से अधिकांश विज्ञापन राजस्व छीन रहे है। बढ़ती छपाई लागत भी अखबार के लाभ में गिरावट के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है। प्रिंट में गिरावट और ऑनलाइन का विकास यूएस और यूरोप के अन्य हिस्सों में, ब्राज़ील और भारत जैसे उभरते देशों से बिल्कुल अलग है। उन्होंने बताया की टैबलेट पर उपलब्ध कई रीडिंग ऐप ने प्रिंट बाजार में एक नई उम्मीद जगायी है। समाचार पत्र या पत्रिका के निर्माण की लागत पृष्ठों की संख्या, इस्तेमाल किया रंग, कागजों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हमें हमारी जड़ों से जोड़ेगी: प्रोफेसर मनोज कुमार सक्सेना

अभिषेक कुमार
सृष्टि चौबे
साक्षिणी प्रभाकर
दिव्या गौतम

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में देश में अग्रणी रहा। इसको मूर्त रूप देने में शिक्षा विभाग के प्रोफेसर तथा एनईपी कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार सक्सेना का अहम योगदान रहा। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के पहलुओं एवं विश्वविद्यालय द्वारा उसके कार्यान्वयन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के छात्र अभिषेक कुमार के साथ प्रो सक्सेना की साक्षात्कार का अंश।

एनईपी 2020 की क्यों जरूरत पड़ी?

शिक्षा नीति तीन दशकों से भी अधिक पुरानी हो चुकी थी। समय की मांग को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाया गया है। 1986 की पुरानी शिक्षा नीति की जडें हमारी गौरवशाली ज्ञान परम्परा से जुड़ी ना होकर विदेशी शिक्षा प्रणाली से अधिक जुड़ी थीं। इस विसंगति के कारण हम अपने सदियों से संकलित ज्ञान का उपयोग देश के उत्थान के लिए नहीं कर पा रहे थे। ना ही विद्यार्थियों को हमारी अद्वितीय ज्ञानकोष के विषय में जानकारी प्राप्त हो पा रही थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता पड़ी ताकि हम सदियों से संचित ज्ञान भण्डार का प्रयोग अपने देश के पुनरुत्थान हेतु कर सकें।

एनईपी 2020, 1986 की शिक्षा नीति से कैसे अलग है?

पहले की पढ़ाई में थ्योरी पर अधिक ध्यान दिया जाता था और व्यावहारिक ज्ञान यानी प्रेक्टिकल पर कम। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में छात्रों को थ्योरी के साथ ही व्यावहारिक

प्रोफेसर मनोज कुमार सक्सेना

कौशल भी सिखाए जायेंगे। वे विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार प्राप्त करने तथा स्वयं रोज़गार पैदा करने में सक्षम हो सकेंगे। साथ ही, विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार अपने मन का विषय चुन सकता है। एनईपी 2020 में क्रेडिट बैंक की व्यवस्था है। विद्यार्थियों के लिए यह काफी लाभदायक साबित होगा। अगर किसी विद्यार्थी को अपनी पढ़ाई किसी कारणवश बीच में ही छोड़नी पड़ती है तो उसके द्वारा उस समय तक अर्जित सारे क्रेडिट, एक क्रेडिट बैंक में डाल दिए जायेंगे। भविष्य में अधिकतर 7 वर्षों तक जब कभी भी वह अपनी डिग्री पूर्ण करना चाहेगा तो वह वहीं से अपनी शिक्षा पुनः आरम्भ कर सकेगा जहाँ से उसने अपनी शिक्षा छोड़ी थी। यानी विद्यार्थी के समय की बचत होगी।

सीयूएचपी में कब पूर्ण रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होगी?

सीयूएचपी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को 50 प्रतिशत तक माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी के दिशा निर्देशन में सफलतापूर्वक लागू कर दिया है। हम देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने वाले संस्थानों की अग्रणी पंक्ति में खड़े हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विवि के शिक्षक निरंतर काम कर रहे हैं। हालाँकि विश्वविद्यालय का अपना परिसर ना होने की वजह से कुछ दिक्कतों का सामना भी करना पड़ रहा है। फिर भी जल्द से जल्द इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरी तरह से लागू करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

क्या एनईपी 2020 से शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव देखने को मिलेगा?

अभी तक देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र को अपनाने वाले शिक्षकों को शिक्षण कौशल का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता था। इस कमी को दूर करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षण कौशल को अनिवार्य रूप से शामिल किया जायेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह प्रावधान है कि प्रत्येक शोधकर्ता को शिक्षण कौशल का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। शिक्षण के क्षेत्र में जाने पर ये कौशल उनकी मदद करेगा और वे अपने छात्रों को बेहतर ढंग से पढ़ा पाएंगे। इसके साथ ही शोध को बढ़ावा देने पर पर भी काफी ध्यान दिया गया है। अब विद्यार्थी स्नातक स्तर पर शोध का अध्ययन कर सकेंगे तथा उसके पश्चात एक वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकेंगे। इससे हमारे देश में शोध की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा और हम शोध के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त कर पाएंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से क्या उम्मीदें की जानी चाहिए?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत को विश्व गुरु बनाने की ओर ले जायेगी।राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमें हमारी जड़ों से जोड़ेगी यानी इतिहास, हमारी संस्कृति और हमारी पुरानी पहचान से जोड़ेगी। हम यह आशा कर सकते हैं कि इस शिक्षा नीति के पूर्ण रूप से लागू होने के बाद हम अपने गौरवशाली इतिहास से रूबरू हो पाएंगे और अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा का प्रयोग करते हुए भारत को पुनः विश्व के शिखर पर स्थापित कर पाएंगे।

एक बहुमूल्य कला है थांगका पेंटिंग

गार्गी सूद
29 अक्टूबर 2021

भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत और कला के लिए विश्वप्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश की थांगका पेंटिंग,भारत के इतिहास में सभी कलारूपों में सबसे प्राचीन है।इस तरह की पेंटिंग्स में बुद्ध,लमाओं और बोधिसत्वों के जीवन को चित्रित किया जाता है। थांगका पेंटिंग में सबसे लोकप्रिय चित्रों में से एक जीवन चक्र(भावचक्र) है,जो ज्ञानोदय की कला का प्रतिनिधित्व करता है।

थांगका पेंटिंग,रेशमी कपड़े और कपास के कपड़े पर चित्रित किया जाता है।पेंटिंग बनाने के लिए सबसे पहले सूती कपड़े पर चाक,मिट्टी और गोंद लगाया जाता है और उसके बाद उसे चमड़े की तरह सख्त बनाने के लिए पूरे कपड़े पर लकड़ी से जोर जोर से रगड़ा जाता है।इन चित्रों में प्रयुक्त रंग,पत्थर से बनाए जाते हैं।रंग को बनाने के लिए ,रंगीन पत्थर को पीसा जाता है,फिर उसके पाउडर को 2-3 दिनों के लिए पानी में भिगोकर उसे 2-3 बार अच्छे से छान लिया जाता है।बने हुए रंग को सुखाकर,घुलनशील गोंद में मिलाकर पेंटिंग बनाने के प्रयोग में लाया जाता है।इन पेंटिंग्स में पत्थर के रंग के अलावा शुद्ध सोने का भी इस्तेमाल किया जाता है।यह प्रयोग पेंटिंग को और बहुमूल्य बना देता है।सामान्य थांगका पेंटिंग बनाने में कम से कम एक महीने का वक्त लगता है।थांगका पेंटिंग्स की कीमत बाजार में 40 हज़ार से 25 लाख तक होती है।

"कभी रंग रंग ज़ात ज़ात धर्म धर्म में बांटते है अपनों को,
जब अंग अंग में बांटे जाएंगे तो सोचो कैसा मंज़र होगा।"

-अभ्युदय तिवारी 'आद्विक'

संवाद टीम: अभिषेक कुमार, अभ्युदय तिवारी, अखिल पठानिया, गार्गी सूद, दिव्या गौतम, मरहबा अख्तर, मानसी रेनू, मोहिनी शर्मा, साक्षिणी प्रभाकर, सृष्टि चौबे व शशांक गर्ग

संपादन: साक्षिणी प्रभाकर, सृष्टि चौबे

पृष्ठ सज्जा: अखिल पठानिया, साक्षिणी प्रभाकर

फोटो संकलन एवं संपादन: साक्षिणी प्रभाकर, सृष्टि चौबे

मुद्रण: अभ्युदय तिवारी, शशांक गर्ग

विलुप्त हो रही पहाड़ों की पहचान: घराट

घराट : पानी से चलने वाला प्राकृतिक यंत्र

अभिषेक कुमार
धर्मशाला
29 अक्टूबर 2021

घराट दो पथरों का मेल है जिसे एक प्रक्रिया के दौरान कुछ इस प्रकार से जोड़ा जाता हैं कि एक भाग स्थिर रहता है, वहीं दूसरा भाग घूमता रहता है। लोगों को जीवन देने वाले इस यंत्र का अस्तित्व प्राचीन काल से है,जब एक भी आधुनिक यंत्र इस धरातल पर मौजूद नहीं थे। उस वक्त पर तकनीक से परे ज़मीनी यंत्रों का निर्माण और उपयोग जीवनयापन के लिए एक ज़रूरत थी।परंतु ऐसे साधारण से दिखने वाले यंत्र आज की आधुनिक और तकनीक से भरपूर दुनिया के लिए एक नींव है और एक संदेश भी है कि आधुनिकता के दौड़ में रह कर गुणवत्ता से ज़रा सा भी समझौता नहीं करना चाहिए।यंत्र सिर्फ समय बचाने पर ही केंद्रित नहीं होना चाहिए।

आखिर क्यों विशेष है घराट?

घराट पानी से चलने वाला प्राकृतिक यंत्र है जो पर्यावरण संरक्षण में एक अहम भूमिका अदा करता है। इस यंत्र को फसलों को पीसने के लिए उपयोग में लाया जाता है। घराट बनाने वाले व्यक्ति भी अपने काम में पूर्ण तौर पर माहिर होते है।

खतरे में है संस्कृति?

आज के आधुनिक दौर में बढ़ती जरूरतों और तकनीक के चलते यह संस्कृति ओझल होती नजर आ रही है। लोगों का चक्कियों की तरफ रुख हो या सेब की पैदावार से उपजी आमदनी दोनो ही घराट की विलुप्ति में भागीदारी सांझा करते है। लोग बिजली से चलने वाली चक्कीयों को ही घराट मानते हैं जो कि पूर्णतः सत्य नहीं है। ऐसे बहुत कम व्यक्ति हैं जो आज भी घराट से पीसे हुए आटे की रोटी ही खाना पसंद करते हैं। बड़े दुख की बात है कि आज की युवा पीढ़ी इसे जानती नहीं है। शहरों में घराट को चक्की के नाम से ही जाना जाता है। पहले हर गांव में 1 या 5 की संख्या में घराट होते थे। चाहे वह नदियों के किनारे हो या नालों के किनारे। रोज ग्रांटों पर लोगों की एक बैठक होती थी। लोग गांव में अपने घर का आटा घराट पर पिसवाने जाया करते थे मगर आज के युग में शायद ही ऐसा कोई करता होगा।

क्यों फायदेमंद है घराट का आटा?

विद्युत चक्की से पिसने के बाद जो आटा निकलता है वह गर्म होता है। जिससे उस में मौजूदा पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं और वह आटा सिर्फ एक पाउडर ही बनकर रह जाता है। वहीं घराट से पीसा हुआ आटा हमेशा ठंडा रहता है। जो एक सही गति से पिसता है और उसमें जो पोषक तत्व होते हैं वह बने रहते हैं। जिससे वह स्वादिष्ट लगता है।